रिकार्ड– तूने रात गंवाई सो..... शुक्रवार ओमशांति प्रातःक्लास 5.1.1968
रुहानी बच्चों प्रति रुहानी बाप बैठ समझाते हैं। पढ़ाते भी हैं ;क्योंकि नालेजफुल है ना। जरूर आत्मा ही नालेजफुल है ;परंतु कर्मेन्द्रियों बिना वो बता कैसे सकेगी। अब यह गीत तो मनुष्यों का बनाया हुआ है। माला फेरते2 कितने युग हुए हैं यह तो कोई भी जानते ही नहीं हैं। ऐसे ही (गीत) बना दिया है। पहले2 तो बाप की पहचान होनी चाहिए। बाप ही की महिमा भी गाते हैं कि परमात्मा नमः। अब उस पी–3 का नाम तो चाहिए ना। उनका नाम है शिव। आत्माएं तो सभी हैं। आत्माओं के पिता का नाम है शिव परमात्माय नमः। वो है तो निराकार ही, फिर भी उनका नाम है शिवबाप और सालिग्राम बच्चे। कहीं पर भी तुम (भाषण) करते हो तो पहले ही पहले नाम लेना है शिव परमात्माय नमः। अब परमात्मा कौन है? क्या परमात्मा और भगवान में फर्क है? है तो एक ही। उनकी पूरी2 महिमा करनी चाहिए। जैसे कॉनफ्रेंस में जाते हैं। पहले2 तो परमपिता परमात्मा की महिमा पर समझाना चाहिए। परमात्मा कौन है? हम बाप की महिमा करते हैं। उनका नाम है शिव। वो उंच ते उंच है। उनको ही ईश्वर भी, भगवान भी कहते हैं। पतित–पावन भी है। वो है ज्ञान का सागर, सुख का सागर, सम्पत्ति का सागर है। .....का सागर है। शांति का सागर है। तो जरूर शांति भी तो वो ही स्थापन कर सकता होगा ना। उनसे ही वर्सा मिल सकता है। यहां पर तो सभी कहते हैं कि विश्व में शांति कैसे हो? पहले2 तो यह पता होना चाहिए कि विश्व में शांति थी ही कब? कब फिर होनी चाहिए? कब थी सो हम आपको भगवान की बताई हुई श्रीमत पर सुनाते हैं। ज्ञान का सागर तो वो ही बाप है। बाकी तो जो भी गुरू लोग हैं वो तो हैं भक्ति के। कर्मकाण्ड के सागर। भक्ति में तो कर्मकाण्ड अनेक प्रकार के हैं। ज्ञान तो एक ही है जिससे ही सदगति होती है। ज्ञान सागर के ज्ञान ही से सदगति होती है। भक्ति है अज्ञान। उससे ही दुर्गति होती है। हम बाप की महिमा करते हैं, वो शांति का सागर ,ज्ञान का सागर है। यह तो जरूर समझाना चाहिए। जब सतयुग था तो एक ही देवताओं का ही धर्म था। बाप तो है ही स्वर्ग की स्थापना करने वाला। उनको ही राम भी कहा जाता है। राम के राज्य में तो शेर–कबरी(बकरी) भी इकट्ठे ही जल पीते थे। वहां पर अशांति हो ही नहीं सकती है। अब है रावणराज्य। इसमें सभी आसुरी सम्प्रदाय हैं। अब आसुरी सम. को दैवी सम. श्रीमत ही बनाती है। पहले 2 तो बताना चाहिए कि शांति स्थापन करने वाला ही बाप है। वास्तव में तो हम आत्मा का स्वधर्म ही है शांत, जहां पर आत्माएं रहती हैं वो भी है शांतिधाम। सतयुग को सुखधाम कहते है। कलियुग को दुःखधाम। तमोप्रधान है। तो फिर विश्व में शांति कैसे हो सकती है? शांति तो होगी ही शांतिधाम में। यहां पर तो शांति तभी थी जबकि एक ही धर्म तो एक ही राज्य था। बाप जो पवित्रता का सागर ,शांति का सागर वो ही स्थापना करते हैं। सतयुग में सुख भी ,शांति भी थी। ताली बज ना सके ;क्योंकि धर्म ही एक था। उसको कहा ही जाता है हैवन। कहते भी हैं कि 5000वर्ष हुए जबकि देवी–देवताओं का राज्य था। विश्व में शांति थी, फिर वहो ही रिपीट होगा। अब यह तो तमोप्रधान दुनियां है। मनुष्या सभी तमोप्रधान, भ्रष्टाचारी तथा पत्थर बुद्धि हैं। बोलो विश्व का मालिक बाप जो है उसने जो समझाया है वो हम आपको समझाते हैं। बाप ने कहा है कि मैं साधारण तन में आकर विश्व का कल्याण करता हूं। सतयुग की स्थापना करता हूं। यह समझने की बातें हैं ना। पहले2 तो महिमा करनी ही बाप की है। वो ही शांति ,सुख,पवित्रता का सागर है। बाप कहते हैं कि इन विकारों पर जीत पहनो तो तुम पवित्र बन पवित्र दुनियां का मालिक बन जाओगे। तो जरूर संगमयुग होगा तब तो मृत्युलोक से अमरलोक में जावेंगे। नई दुनियां को ही अमरलोक कहा जाता है। वो है आत्माओं का लोक ,जिसको ब्रह्माण्ड कहा जाता है। आत्मा बहुत छोटी बिंदी है। उनमें 84जन्मों का पार्ट भरा हुआ है। जो पहले2 आते हैं वो ही 84जन्मों का चक्र लेते हैं। पिछाड़ी तक भी आते तो रहते ही हैं ना। आदमशुमारी बढ़ती ही जाती है। कोई तो

एक/दो जन्म ही पार्ट बजाकर बाकी तो टाइम शांतिधाम में रहते हैं। अब बेहद के बाप कहते हैं कि देह सहित देह के सभी धर्म छोड़ मामेकम् याद करो। तुम आत्माएं भाई2 हो। एक ही बाप है। बच्चों को तो जरूर बाप से वर्सा चाहिए। तुमको मिला था। सतयुग में तो एक ही धर्म था। बाकी सभी मुक्तिधाम में थे। वर्सा देने वाला एक बाप ही है। बाप को जानने बिना मनुष्य ऑर्फन है। यह ऑर्फनों की दुनियां है। आपस में ही लड़ते–झगड़ते रहते हैं। शांति को ढूंढते रहते हैं ;परंतु ज्ञान का तीसरा नेत्र जरूर चाहिए। जब त्रिनेत्री त्रिकालदर्शी बने तो ही तो जान भी सकें। आत्मा में ज्ञान आत है। .....बाप में भी तो ज्ञान है ना। बाप को जानने कारण निधणके बन गए हैं। अब तुमको कहते हैं कि शास्त्रार्थ करो। इससे क्या फायदा? वो तो शास्त्रों की अथॉर्टी है। भक्तिमार्ग ..... है ना। भक्तिमार्ग से तो नीचे उतरना ही होता है। बाप ने समझाया है कि तुम कैसे 84जन्म लेकर सीढ़ी नीचे उतरते हो। सतयुग में तो तुम पूज्य थे। फिर सो पुजारी बनते हो। बाप तो पुजारी नहीं बनता है। जब पूज्य देवता बनते हो तो फिर पुजारी भी बनते हो। पूज्य हो तो पुजारी होते ही नहीं हैं। पुजारी है तो पूज्य नहीं हैं। शंकराचार्य भी शिव की पूजा करते हैं। तो पुजारी ही तो ठहरा ना। वो पूज्य कहला नहीं सकते। बाप जब आवे तब ही वो ही पूज्य बनावे। सतोप्रधान ही तो पूज्य होते हैं। वहां रावणराज्य ही नहीं होता है। रावण सबका दुश्मन है। जैसे शिवबाबा भारत में आते हैं तो रावण का राज्य भी भारत में होता है। रावण कोई भी मनुष्य नहीं है। पांच विकारों को ही रावण कहा जाता है। इस समय तो है ही राजा का राज्य। देहअभिमान तो सभी में है। देहीअभिमानी तो एक भी नहीं है। सभी कहते हैं कि शांति कैसे हो? वो तो जो परमपिता परमात्मा आये तभी तो स्थापना हो ना। हैवनली गॉडफादर ही हेवन ही की स्थापना करते हैं। हेवन में है शांति। यहां हेल है। कोई भी मनुष्य यह बता नहीं सकेंगे कि विश्व में शांति कैसे होगी? यह है ही तमोप्रधान दुनियां। इसको ही सतोप्रधान बनाना तो बाप का ही फर्ज है। सो अपना काम कर रहे हैं। एक धर्म की स्थापना और बाकी सभी अनेक धर्मों का विनाश हो जाना है। नहीं तो बताओ देवी–देवताओं के राज्य की स्थापना कैसे हुई? क्या कोई लड़ाई की? नहीं। यह तो योगबल ही गाया जाता है। बाप ने ही सिखाया है। पहले पवित्र प्रवृत्ति मार्ग था। अब अपवित्र प्रवृत्ति मार्ग है। फिर पवित्र बनना है। सन्यासी लोग तो अनेकों प्रकार की हठयोग सिखाते हैं। यह राजयोग तो जो बाप ही सिखाते हैं। यह पुरुषार्थ भी करवाना बाप का ही काम है। बाप आते ही हैं पुरुषोत्तम संगमयुगे। शिवजयंती भी भारत में ही मनाते हैं। रावणजयंती भी भारत ही में मनाते हैं। रावण है दुश्मन। शिवबाबा है सज्जन। वो दुर्गति करता है। शिवबाबा सदगति देते हैं। इस समय सभी दुर्गति में ही पड़े हुए हैं। सदगति के लिए तो ज्ञान चाहिए। गायन भी है ज्ञान,भक्ति,वैराग। भक्ति है रात। फिर उनसे ही वैराग होता है। हमको अभी इस सारे पुराने विश्व से वैराग है। सन्यासी लोग तो सिर्फ घर–बार ही छोड़ते हैं। वो भी फिर पैसों के ही लालच में आ जाते हैं। वो कब भी राजयोग सिखा नहीं सकते हैं। निवृत्तिमार्ग वाले प्रवृत्ति मार्ग का ज्ञान सीख नहीं सकते। यह ज्ञान कोई में भी नहीं है। इसलिए ही उनको कहा जाता है अंधे की औलाद अंधे। अंधा बनाने वाला है रावण। सज्जा बनाने वाला है शिवबाबा। यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है उसकी आदि,मध्य,अंत को जानना चाहिए ना। हमको तो शिवबाबा ने .....है। हम शिवबाबा की और इन ब्र.वि.शं. की बायोग्राफी को जानते हैं। यह ब्र.वि. शं. को तो सूक्ष्मवतन में दिखाया है ;परंतु वो तो सूक्ष्मवतन में होता कुछ भी नहीं है। सूक्ष्मवतन में शंकर को नाग–बलायें दिखा दी हैं। बैल आदि कहां से आया? आत्माएं तो सभी इनकारपोरियल वर्ल्ड में रहती हैं जिसको ही ब्रह्मतत्व भी कहते हैं। वहां रहती हैं। जैसे आकाश में स्टार्स खड़े हैं वैसे ही निराकारी दुनियां में आत्माएं भी ऐसे ही रहती हैं नम्बरवार। इन सभी बातों को समझने के लिए 7 रोज चाहिए। जो अच्छी रीत समझो। सात रोज में सभी

प्वाइंट्स समझाई जाती हैं। बाप को जानने से तुमको जीवनमुक्ति का वर्सा मिलेगा। स्वर्ग की प्राप्ति होगी। बाप ही स्वर्ग की स्थापना करते हैं। जितना जो जैसा पुरुषार्थ करेगा ऐसा पद पावेगा। यह गुप्त राजधानी स्थापन हो रही है। बाप भी है गुप्त। हम बच्चे भी गुप्त। योगबल से विश्व की बादशाही ले रहे हैं। गायन भी है दो लड़ते हैं मक्खन बीच में तीसरा खाता है। मूसलों से लड़ते हैं वह आपस में । बीच में मक्खन श्रीकृष्ण खा जाते हैं। वही फर्स्ट प्रिंस तुम दिखाते भी हो। कृष्ण की आत्मा ही गोरी फिर कृष्ण की आत्मा ही सांवरी। कृष्ण तो पीस स्थापन नहीं करते। गीता का भगवान कोई कृष्ण नहीं है। शिव है। यह ही बहुत बड़ी भूल है भारत में। श्रीकृष्ण की तो महिमा करेंगे सर्वगुणसम्पन्न .....और वह तो है ज्ञान का सागर। अब गीता का भगवान पतित–पावन कौन? गंगा पावन बनाती है क्या? पतित हैं तब तो जाते हैं ना। यह है सारा भक्तिमार्ग। वास्तव में पतित–पावन तो बाप ही है। बाप कहते हैं माया पर जीत पाओ। पावन बनो तो तुम जगतजीत बन जावेंगे। इन(ल.ना.) के राज्य में शांति थी। विश्व में एक ही राज्य था। शांति एक होती है सतयुग में ,दूसरा होती हैं निराकारी दुनियां में। तुम जो चाहते हो वह तो स्थापन हो रही है। हम ब्राह्मण से देवता बन रहे हैं। शूद्र से ब्राह्मण बनने लिए यह पढ़ाई है। अच्छी रीत समझाना चाहिए। छोड़ न देना चाहिए। घड़ी2 उन्हों के कान्फ्रेंस आदि तो होती ही रहती है। शांति कैसे हो सकती है सो तुमको समझाना है। विचार–सागर–मंथन चलना चाहिए हम ऐसे2 समझावेंगे। ज्ञान की धारणा है तो जरूर सुनावेंगे। ज्ञान की धारणा नहीं तो किसको समझाने के लायक नहीं। तो गोया नालायक ही कहेंगे। ज्ञान न है उनमें तो जरूर सभी विकार ही हैं। मंसा में तो आती है ना। मंसा में भी न आये ऐसी अवस्था को प्राप्त करना है। वह ज्ञानी तू आत्मा ही तख्त पर बैठने लायक बनती है। नहीं तो अनपढ़े पढ़े आगे भरी ही ढोवेंगे। पिछाड़ी में तुमको सब मालूम पड़ेगा कौन फेल होते हैं। इसमें आसुरी गुण तो बिल्कुल ही नहीं चाहिए। आसुरी गुण वाले को गुन्डा कहा जाता है। जिनमें क्रोध,लोभ,अहंकार आदि है। बहुत मीठा बनना है। कभी ऐसी चलन न हो जो समझे कि यह तो गुन्डा है। बहुत पुरुषार्थ करना है। क्रिमिनल आई बिल्कुल ही सिविल आई बनानी है। क्रोध आता है तो कितना तंग करते हैं। क्रोधी को काम का नशा भी सताता है। झट पता पड़ जाता है यह दैवी सम्प्रदाय है या आसुरी सम्प्रदाय। ज्ञान बिगर है ही डाग्स। कोई क्रोध करते हैं तो कहते हैं ना कुतरे माफिक भूं–भूं क्यों करते हो? आत्मा ज्ञान उठ नहीं सकती है तो जरूर अज्ञान ही होगा। सब शांति2 मांगते हैं। पहले2 तो महिमा करनी चाहिए बाप की। फिर समझाना चाहिए यह सुख–दुःख का खेल यहां ही है। हैविनली गॉडफादर ही आकर हैविन स्थापन करते हैं। भारत ही सुखधाम बनता है। सतयग में एक धर्म था। मांगते भी है एक राज्य हो। एक धर्म था जो अब प्रायःलोप है। (बनियन ट्री का मिसाल) भगवान पढ़ाकर सदगति को प्राप्त कराते हैं। मनुष्यों की गीता पढ़ते2 तो दुर्गति ही होती जाती है। यही गीता बाप सुनाते हैं तो सदगति हो जाती है। सर्वगुण सम्पन्न 16कला सम्पूर्ण देवता बनते हैं। वह गीता सुनते2 तो कहते हमारे में कोई गुण नहीं है। तो बाप कितना समझाते हैं ;परंतु किसकी तकदीर में भी हो ना। बाप को ही जानते नहीं। बाप को भूलने से निधणके बन जाते हैं। सतोप्रधनान ,सतो,रजो,तमो में आना ही है। शांति स्थापन करने वाला बाप ही है जो कर रहे हैं। यह पुरुषोत्तम संगमयुग है। कांफ्रेंस में तुम अच्छी रीत समझा सकते हो। धर्म के गुरू लोग तो बहुत ही आते हैं। यह सब हैं कलियुगी गुरू। अब बाबा ने तो समझाया इस प्वाइंट पर रोज क्लास करो। हरेक समझावे तो पता पड़ जावेगा बुद्धि में कितनी धारण होती हे। सब तो एक जैसे हो न सके। पुरुषार्थ करना चाहिए उंच ते उंच बनने का। पत्थर बुद्धि से पारस बुद्धि सतोप्रधान बनना है। जितना जो बना होगा उतना समझा सकेंगे। विश्व में शांति कैसे होती है यह समझाने वाले तो तुम ही हो। मूल बात ही यह है। मनुष्य तो बिल्कुल ही पत्थरबुद्धि। इसको कहा जाता है कांटों का जंगल। सतयुग को कहा जाता

है फूलों का बगीचा। बाप ही आकर फूलों का बगीचा बनाते हैं। द्वापर से फिर कांटों का जंगल रावण राज्य शुरू होता है ;परंतु अपन का रावण सम्प्रदाय के समझते थोड़े ही हैं ;परंतु कांटों के जंगल में शांति कहां से आती है? रावण कौन है यह किसको पता नहीं है। बाप कहते हैं कितने ईडियट्स बेसमझ हैं। तुम बाबा का नाम लेते रहो। बाबा ऐसे कहते हैं तो फिर कोई गुस्सा आदि नहीं करेंगे। बोलो हम थोड़े ही कहते हैं। यह तो भगवानुवाच है। तुम हो गॉडली चिल्ड्रेन। वह फिर डॉगली चिल्ड्रेन बन जाते हैं। अल्लाह के बच्चे सो उल्लू बच्चे बन जाते हैं। क्रोध देहाभिमान बहुत है। गाये भी हुए हैं अंधे के औलाद अंधे। यह भी समझाना है परिस्तान में शांति होती है। कब्रिस्तान में है अशांति। बाप बागवान ही आकर फूलों का बगीचा बनाते हैं। वहां कांटा नहीं होता। रावण ही नहीं तो कांटा कैसे लगावेंगे? यह समझने की बात है। समझते कुछ नहीं है। तब ही कहा जाता है रीढ़ क्या समझे.....इस समय सब हैं देहाभिमानी सान्डे। बाप आकर मनुष्य से देवता बनाते हैं। ब्राह्मण कुल में भी कितने होते हैं। सूक्ष्मवतन में तो कुछ है नहीं। यह सब सा. होते हैं। तुम बच्चे भी सा. करते हो। लाइट कैसे आती है, क्या होता है, उसका सा. होता है। बाकी सूक्ष्मवतन में कुछ नहीं है। मुख्य है ही मूलवतन और स्थूलवतन। सूक्ष्मवतन भी गाया हुआ है जो मूवी चलती है। बाकी इनकी हिस्ट्री–जॉग्राफी तो कुछ है नहीं। यह है ज्ञान का सा.। व्यक्त सो अव्यक्त कैसे बनते हैं? अव्यक्त बने फिर तो चले जावेंगे। दिखाते हैं ऐसे फरिश्ते बनते हैं फिर शरीर छोड़ देते हैं। यह सब है सा.। सूक्ष्मवतन का भी सा.। ज्ञान–योग की बातें नहीं हैं। बाबा तो कहते हैं ध्यान में भी टाइम वेस्ट होता है। तुम बच्चों (को) तो बाबा ने समझाया अब समझाने लिए रिहर्सल करो तो इनसे हरेक की अवस्था का मालूम पड़ जावेगा। भूतों को भी भगाना चाहिए। नहीं तो सजायें बहुत खानी पड़े। पद भ्रष्ट हो जावेगा। अच्छा, मीठे सिकीलधे रुहानी बच्चों प्रति रुहानी बाप व दादा का यादप्यार गुडमार्निंग और नमस्ते।